लीजा इण्डिया – पाठक सर्वेक्षण परिणाम – 2013

हिन्दी अंक

प्रत्येक त्रैमास में लीजा इण्डिया पत्रिका का प्रकाशन इस उद्देश्य से कियाजाता है कि किसान लीजा गतिविधियों को अपनाते हुए टिकाउ खेती की ओर अग्रसर हो सकें। वैश्विक लीजा पत्रिका के पूरक के तौर पर प्रारम्भ की गयी यह पत्रिका 1999 में स्वतन्त्र रूप से निकाली जाने लगी और तब से लेकर आज तक यह पत्रिका निरन्तर प्रकाशित की जा रही है। लीजा इण्डिया पत्रिका का प्रारम्भ अंग्रेजी पत्रिका के रूप में हुआ और इसके पाठकों की संख्या तब 800 थी, जो आज बढ़कर 7000 के लगभग हो गयी है। इसके पाठकों में शिक्षाविद्, शोधार्थी, किसान, स्वैच्छिक संगठन, छात्रों, सरकारी विभाग, बैंक आदि सभी शामिल हैं। यह कार्यक्रम इलिया व मिजरेजियर से सहायतित है। इसके सहयोगियों में किसान, स्वैच्छिक संगठन, शोधार्थी और शिक्षाविद् शामिल हैं। पाठकों के लिए इसकी उपयोगिता एवं इसे और उन्नत बनाने के लिए लीजा इण्डिया समय–समय पर इसके पाठकों के बीच एक सर्वेक्षण कराता रहता है।

यह सर्वेक्षण माह अगस्त, 2013 में कराया गया। जिसके तहत् साधारण ढंग से उचित खुले प्रश्नों की एक दो पन्ने की प्रश्नावली तैयार कर उसे सभी पाठकों के पास भेजा गया। सर्वेक्षण के प्रतिउत्तर काफी उत्साहित करने वाले थे। लगभग 5 प्रतिशत पाठकों ने हमारे सर्वेक्षण प्रश्नावली का जवाब भेजा। हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। इस सर्वेक्षण परिणाम को संक्षेप में निम्नवत् प्रस्तुत किया जा रहा है –

सर्वेक्षण के मुख्य बिन्दु

- 95 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने माना कि विशेषकर वैकल्पिक कृषि एवं इसके प्रक्षेत्र आधारित अनुभवों के कारण लीजा इण्डिया बेहद रूचिकर है।
- 98 प्रतिशत उत्तरदाता लीजा इण्डिया में प्रकाशित सामग्रियों का उपयोग विभिन्न तरीकों से करते हैं।
- दो तिहाई से अधिक उत्तरदाता इसकी सामग्रियों का उपयोग प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में सन्दर्भ के तौर पर करते हैं।
- दो तिहाई के लगभग उत्तरदाता इसमें प्रकाशित अनुभवों को अपने खेत पर अपनाते हैं।
- आधे से अधिक उत्तरदाता इसकी सामग्रियों का उपयोग प्रशिक्षण सामग्री विकसित करने के लिए करते हैं।
- इसमें प्रकाशित अनुभवों का उपयोग कार्यशालाओं, प्रशिक्षणों एवं बैठकों आदि में किया जाता है।
- 80 प्रतिशत लोग अपने मित्रों एवं सहयोगियों के साथ इसमें प्रकाशित जानकारियों को साझा करते हैं।
- विभिन्न भाषायी अनुवादों के माध्यम से भारत के अन्दर एवं अन्य दक्षिणी एशियाई देशों में इसकी पहुंच को विस्तार देने का काम किया जा रहा है।

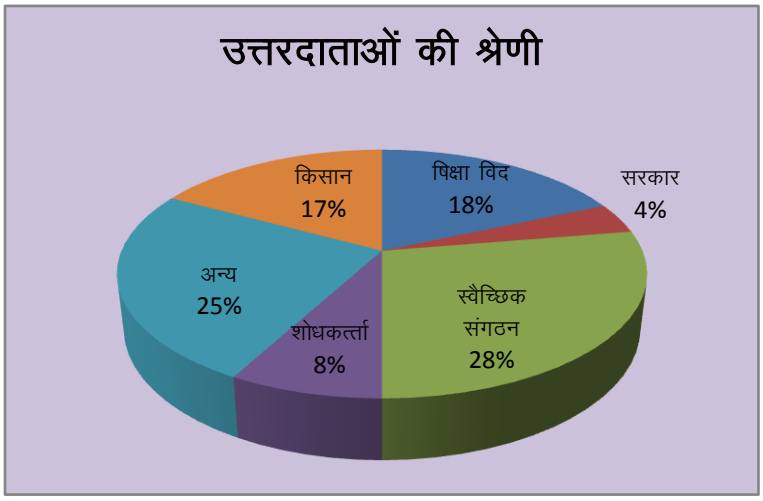

लीजा रूचिकर क्यों है –

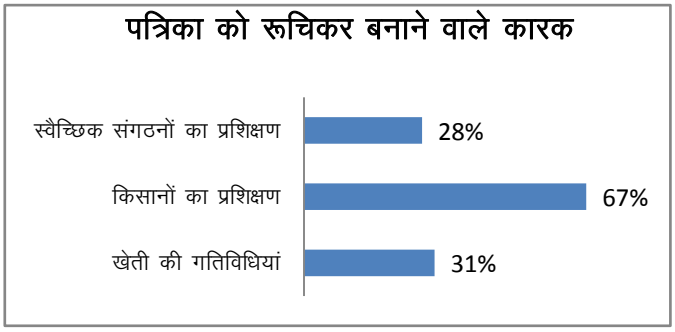

95 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि यह पत्रिका काफी रोचक है। 83 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह माना कि लीजा इण्डिया वैकल्पिक खेती पर जानकारियां उपलब्ध कराती है। जबकि 17 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि चूंकि लीजा इण्डिया में प्रकाशित अनुभव खेत आधारित होने के कारण यह पत्रिका काफी रूचिकर होती है।

लीजा इण्डिया का उपयोग किस प्रकार हो रहा है

89 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह बताया कि वे पत्रिका में प्रकाशित सामग्रियों का उपयोग किस प्रकार कर रहे हैं।

एक उल्लेखनीय बात यह है कि लीजा इण्डिया में प्रकाशित सामग्रियों का उपयोग सघन रूप से शिक्षण एवं प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री के तौर पर किया जा रहा है –

- 67 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे इसमें प्रकाशित सामग्रियों का उपयोग किसानों के प्रशिक्षण में करते हैं।
- 11 प्रतिशत लोगों ने इसके आधार पर प्रशिक्षण सामग्री विकसित की है।
- 28 प्रतिशत लोगों का कहना था वे इनसे आधार लेकर स्वैच्छिक संगठनों के कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण करते हैं।
- 27 प्रतिशत के लगभग लोग इसका उपयोग एडवोकेसी करने हेतु करते हैं।

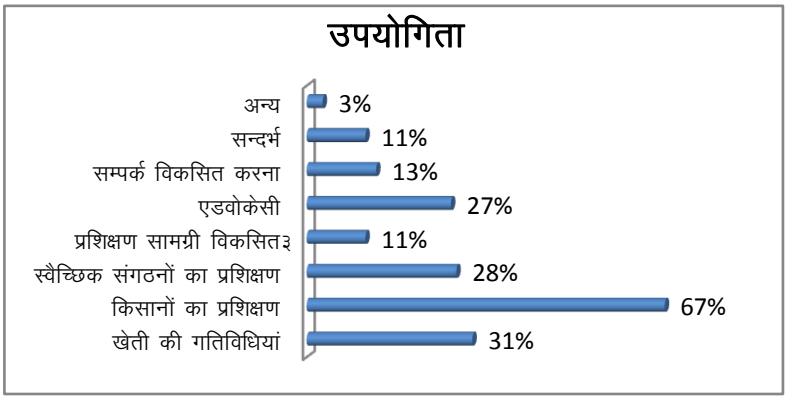

- 13 प्रतिशत लोगों का जुड़ाव इस पत्रिका के माध्यम से बेहतर हुआ है।
- जबकि 11 प्रतिशत लोगों ने इसमें प्रकाशित सामग्रियों के आधार पर वैकल्पिक खेती गतिविधियों को प्रसारित किया है।

लीजा का विस्तार

लीजा के विस्तार भी उल्लेखनीय है –

- लगभग 61 प्रतिशत लोगों ने इसकी सामग्रियों को बैठकों, प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं आदि में दूसरे के साथ साझा किया है।
- व्यक्तिगत तौर पर मिलकर, छोटी–छोटी बैठकों, प्रशिक्षणों एवं अन्य कार्यक्रमों के दौरान 1–50 व्यक्तियों के साथ विषय साझा करने वाले लोगों की संख्या लगभग 52 प्रतिशत है।

- 15 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे बड़ी किसान गोष्ठियों में इसकी सामग्रियों को लोगों के साथ बांटते हैं।

पाठकों के विचार

- लीजा पत्रिका किसी भी उस संस्थान के लिए आवश्यक है, जहां पर बी0एस0सी0 एवं एम0एस0सी0 कृषि की पढ़ाई होती है।

  डा0 एस0पी0 वर्मा

- पत्रिका में स्थानीय अनुभवों एवं गतिविधियों को समाहित किया जाना चाहिए।

  श्री राकेश प्रसाद दूबे, किसान, उत्तर प्रदेश

- खाद्य प्रसंस्करण के समन्वयन से सम्बन्धित लेख ग्रामीण महिलाओं एवं महिला किसानों के लिए विशेष उपयोगी हैं।

  श्रीमती पार्बती दास, महिला किसान, उड़ीसा

- पत्रिका में प्रकाशित सामग्रियों को गांव एवं विकास खण्ड स्तर की बैठकों में साझा करते हैं।

  श्री दयानन्द, किसान, हरियाणा

- लीजा गतिविधियों के प्रसार से बेरोजगार युवाओं का जुड़ाव हो रहा है।

  श्री रामकृष्ण, छात्र, उ0प्र0